जीवन संबंधों का योग है

जीवन संबंध है, रिलेशनशिप है। हम संबंधों में जीते हैं। हम अपने चारों तरफ अगर पारस का काम करते हैं, तो यह असंभव है कि बाकी लोग हमारे लिए पारस न हो जाएं। वे भी हो जाते हैं।

अपना मित्र वही है, जो अपने चारों ओर मंगल का फैलाव करता है, जो अपने चारों ओर शुभ की कामना करता है, जो अपने चारों ओर नमन से भरा हुआ है, जो अपने चारों ओर कृतज्ञता का ज्ञापन करता चलता है।

और जो व्यक्ति दूसरों के लिए मंगल से भरा हो, वह अपने लिए अमंगल से कैसे भर सकता है! जो दूसरों के लिए भी सुख की कामना से भरा हो, वह अपने लिए दुख की कामना से नहीं भर सकता। अपना मित्र हो जाता है। और अपना मित्र हो जाना बहुत बड़ी घटना है। जो अपना मित्र हो गया, वह धार्मिक हो गया। अब वह ऐसा कोई भी काम नहीं कर सकता, जिससे स्वयं को दुख मिले। तो अपना हिसाब रख लेना चाहिए कि मैं ऐसे कौन-कौन से काम करता हूं, जिससे मैं ही दुख पाता हूं। दिन में हम हजार काम कर रहे हैं; जिनसे हम दुख पाते हैं, हजार बार पा चुके हैं। लेकिन कभी हम ठीक से तर्क नहीं समझ पाते हैं जीवन का कि हम इन कामों को करके दुख पाते हैं। वही बात, जो आपको हजार बार मुश्किल में डाल चुकी है, आप फिर कह देते हैं। वही व्यवहार, जो आपको हजार बार पीड़ा में धक्के दे चुका है, आप फिर कर गुजरते हैं। वही सब दोहराए चले जाते हैं यंत्र की भांति।

जिंदगी एक पुनरुक्ति से ज्यादा नहीं मालूम पड़ती, जैसा हम जीते हैं, एक मैकेनिकल रिपीटीशन। वही भूलें, वही चूकें। नई भूल करने वाले अविष्कारी आदमी भी बहुत कम हैं। बस, पुरानी भूलें ही हम किए चले जाते हैं। इतनी बुद्धि भी नहीं कि एकाध नई भूल करें। पुराना; कल किया था वही; परसों भी किया था वही! आज फिर वहीं करेंगे। कल फिर वही करेंगे।

इसके प्रति सजग होंगे, अपनी शत्रुता के प्रति

जीसस ने कहा, परमात्मा न करे कि मैं किसी का निर्णायक बनूं। क्योंकि मैं किसी को अपना निर्णायक नहीं बनाना चाहता हूं। जीसस का वचन है, जज यी नाट, दैट यी शुड नाट बी जज्ड। तुम किसी के निर्णायक मत बनो, ताकि कोई तुम्हारा कभी निर्णायक न बने।

सजग होंगे, तो अपनी मित्रता का आधार बनना शुरू होगा।

कृष्ण या बुद्ध या महावीर या क्राइस्ट जैसे लोग अपने लिए, अपने लिए ही इतने आनंद का रास्ता बनाते हैं, जिसका कोई हिसाब नहीं हैं। ऊपर से हमें लगता है कि वे लोग बिलकुल त्यागी हैं; लेकिन मैं आपसे कहता हूं, इनसे ज्यादा परम स्वार्थी और कोई भी नहीं है।

हम त्यागी कहे जा सकते हैं, क्योंकि हमसे ज्यादा मूढ़ कोई भी नहीं है। हम, जो भी महत्वपूर्ण है, उसका त्याग कर देते हैं; और जो व्यर्थ है, उस कचरे को इकट्ठा कर लेते हैं। और ये बहुत होशियार लोग हैं। ये, जो व्यर्थ है, उस सबको छोड़ देते हैं, जो सार्थक है, उसको बचा लेते हैं।

जीसस एक गांव के बाहर ठहरे हुए है। सांझ का वक्त है। उस गांव के पंडित-पुरोहितों को बड़ी तकलीफ है जीसस के आने से। सदा होती है। जब भी कोई जानने वाला पैदा हो जाता है, तो झूठे जानने वालों को तकलीफ शुरू हो जाती है। जो स्वाभाविक है। उसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। पंडित तो जानते हैं किताबों से। जीसस जानते हैं जीवन से। तो किताबों से जानने वाला आदमी, जीवन से जानने वाले आदमी के सामने फीका पड़ जाता है, कठिनाई में पड़ जाता है, मुश्किल में पड़ जाता है।

गांव के पंडित परेशान हैं। उन्होंने कहा कि जीसस को फंसाने का कोई उपाय खोजना जरूरी है। उन्होंने बड़ा इंतजाम किया और उपाय खोज लिया। उपाय की कोई कमी नहीं है। वे गांव से एक स्त्री को पकड़ लाए, जो कि व्यभिचार में पकड़ी गई थी। यहूदियों की पुरानी धर्म की किताब में लिखा है कि जो स्त्री व्यभिचार में पकड़ी जाए, उसको पत्थर मारकर मार डालना चाहिए।

तो उस स्त्री को वे ले आए जीसस के पास और उन्होंने कहा कि यह किताब है हमारी पुरानी, धर्मग्रंथ की। इसमें लिखा है कि जो स्त्री व्यभिचार करे, उसे पत्थर मारकर मार डालना चाहिए। आप क्या कहते हैं? इस स्त्री ने व्यभिचार किया है। यह पूरा गांव गवाह है।

यह जीसस को दिक्कत में डालने के लिए बड़ा सीधा उपाय था। अगर जीसस कहें कि ठीक है, पुरानी किताब को मानकर पत्थरों से मार डालो इसे; तो जीसस के उस वचन का क्या होगा, जिसमें जीसस ने कहा है कि जो तुम्हें एक चांटा मारे, तुम उसके सामने दूसरा गाल कर दो। और जो तुम्हारा कोट छीने, उसे कमीज भी दे दो। और अपने शत्रुओं को भी प्रेम करो। उन सब वचनों का क्या होगा? तो जीसस को कठिनाई खड़ी हो जाएगी। और अगर जीसस कहें कि नहीं, पत्थर मार नहीं सकते इसे। माफ कर दो, क्षमा कर दो। तो हम कहेंगे, तुम हमारी धर्म-पुस्तक के विपरीत बात कहते हो! तो तुम धर्म के दुश्मन हो।

लेकिन उन्हें पता नहीं था कि जीसस जैसे आदमी को मुट्ठियों में बांधना आसान नहीं होता। पारे की तरह होते हैं ऐसे लोग। मुट्ठी बांधी कि बाहर निकल जाते हैं।

जीसस ने कहा कि बिलकुल ठीक कहती है पुरानी किताब! पत्थर हाथ में उठा लो और इस स्त्री को पत्थरों से मार डालो। वे तो बड़े हैरान हुए। उन्होंने तो सोचा भी न था कि यह होगा। पर जीसस ने कहा, खयाल रखें, पहला आदमी वह हो पत्थर मारने वाला, जिसने व्यभिचार न किया हो और व्यभिचार का विचार न किया हो।

कोई आदमी नहीं था उस गांव में, जिसने व्यभिचार का विचार न किया हो। किस गांव में ऐसा आदमी है। जो लोग आगे खड़े थे साफे-पगड़ियां वगैरह बांधकर, पत्थर हाथ में लिए, वे धीरे-धीरे भीड़ में पीछे सरकने लगे। यह तो उपद्रव की बात है। जो पीछे खड़े थे, वे तो भाग खड़े हुए। उन्होंने कहा कि यहां ठहरना ठीक नहीं है। थोड़ी देर में वह नदी का तट खाली हो गया था। वह स्त्री थी और जीसस थे।

जब सारे लोग जा चुके, तो उस स्त्री ने जीसस से पूछा कि आप मुझे जो सजा दें, मैं लेने को तेयार हूं; मैं व्यभिचारी हूं। मुझ पर कृपा करें और मुझे सजा दें। जीसस ने कहा, मुझे माफ कर।

हर मंदिर और मस्जिद के नीचे सुरंग होनी चाहिए, जिसमें से कोई भी मंदिर से मस्जिद में जा सके। और हर गुरुद्वारे के नीचे मंदिर को जोड़ने वाली सुरंग होनी चाहिए, कि कभी भी किसी की मौज आ जाए, तो तत्काल गुरुद्वारे से मंदिर या मस्जिद या चर्च में जा सके। लेकिन सुरंगों की तो बात दूर, ऊपर के रास्ते भी बंद हैं, सब रास्ते बंद हैं।

परमात्मा न करे कि मैं किसी का निर्णायक बनूं, क्योंकि मैं किसी को अपना निर्णायक नहीं बनाना चाहता हूं।

जीसस ने कहा, परमात्मा न करे कि मैं किसी का निर्णायक बनूं। क्योंकि मैं किसी को अपना निर्णायक नहीं बनाना चाहता हूं। जीसस का वचन है, जज यी नाट, दैट यी शुड नाट बी जज्ड। तुम किसी के निर्णायक मत बनो, ताकि कोई तुम्हारा कभी निर्णायक न बने।

मैं कौन हूं! मैं। इतना अहंकार कैसे करूं कि तेरा निर्णय करूं! मैं हूं कौन! तू जान, तेरा परमात्मा जाने। मैं कौन हूं! मैं तेरे बीच में खड़ा होने वाला कौन हूं। मैं अगर तुझे जरा ऊंची जगह पर खड़े होकर भी देखूं, तो पापी हो गया। मैं कौन हूं! मैं कोई भी नहीं हूं। और फिर तूने खुद स्वीकार किया कि तू व्यभिचारिणी है, तो तू पाप से मुक्त हो गई, बात समाप्त हो गई।

स्वीकृति मुक्ति है। अस्वीकृति में पाप छिपता

है, स्वीकृति में विसर्जित हो जाता है। जीसस ने कहा कि मुझे मत उलझा। मैं तेरा निर्णायक नहीं बनूंगा, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि कोई मेरा निर्णय करें।

जो आप नहीं चाहते कि दूसरे आपके साथ करे, कृपा करके वह आप दूसरों के साथ न करें। जीसस की पूरी नई बाइबिल का सार एक ही वचन है, दूसरों के साथ वह मत करें, जो आप नहीं चाहते कि दूसरे आपके साथ करें। और अगर इस वाक्य को ठीक से समझ लें, तो कृष्ण का सूत्र समझ में आ जाए।

और कई बार ऐसा मजेदार होता है कि कृष्ण के किसी वाक्य की व्याख्या बाइबिल में होती है। और बाइबिल के किसी वाक्य की व्याख्या गीता में होती है। कभी कुरान के किसी सूत्र की व्याख्या वेद में होती है। कभी वेद के किसी सूत्र की व्याख्या कोई यहूदी फकीर करता है। कभी बुद्ध का वचन चीन में समझ जाता है। और कभी चीन में लाओत्से का कहा गया वचन हिंदुस्तान का कोई कबीर समझता है।

लेकिन धर्मों ने इतनी दीवालें खड़ी कर दी हैं इन सबके बीच कि इनके बीच जो बहुत आंतरिक संबंध के सूत्र दौड़ते हैं, उनका हमें कोई स्मरण नहीं रहा। नहीं तो हर मंदिर और मंस्जिद के नीचे सुरंग होनी चाहिए, जिसमें से कोई भी मंदिर से मंस्जिद में जा सके। और हर गुरुद्वारे के नीचे मंदिर को जोड़ने वाली सुरंग होनी चाहिए, कि कभी भी किसी की मौज आ जाए, तो तत्काल गुरुद्वारे से मंदिर या मस्जिद या चर्च में जा सके। लेकिन सुरंगों की तो बात दूर, ऊपर के रास्ते भी बंद हैं, सब रास्ते बंद हैं।

अपना मित्र दूसरों के साथ वही करेगा, जो वह चाहता है कि दूसरे उसके साथ करें। अपना शत्रु दूसरों के साथ वही करेगा, जो वह चाहता है कि दूसरे कभी उसके साथ न करें। और जो अपना मित्र हो गया, वह योग की यात्रा पर निकल पड़ा है। और आत्मा अपनी मित्र भी हो सकती है, शत्रु भी हो सकती है।

ध्यान रखना, शत्रु होना सदा आसान है। शत्रु होने के लिए क्या करना पड़ता है, कभी आपने खयाल किया है! अगर आपको किसी का शत्रु होना है, तो एक सेकेंड में हो सकते हैं। और अगर मित्र होना है, तो पूरा जन्म भी ना काफी है। अगर आपको किसी का शत्रु होना है, तो क्षण की भी तो जरूरत नहीं है, क्षण भी काफी है। एक जरा-सा शब्द और शत्रुता की पूरी की पूरी व्यवस्था हो जाएगी। लेकिन अगर आपको किसी का मित्र होना है, तो पूरा जीवन भी नाकाफी है, नाट इनफ। पूरी जिंदगी श्रम करने के बाद भी कहीं कोई चीज, अभी दरार बाकी रह जाएगी, जो पूरी नहीं हो पाती।

मित्रता बड़ी साधना है, शत्रुता बच्चों का खेल है। इसलिए हम शत्रुता में आसानी से उतर जाते हैं। और खुद के साथ मित्रता तो बहुत ही कठिन है। दूसरे के साथ इतनी कठिन है, खुद के साथ तो और भी कठिन है।

हम सब नासमझी में जीते हैं। लेकिन नासमझी में इतनी अकड़ से जीते हैं कि समझ को आने का दरवाजा भी खुला नहीं छोड़ते। असल में नासमझ लोगों से ज्यादा स्वयं को समझदार समझने वाले लोग नहीं होते! और जिसने अपने को समझा कि बहुत समझदार है, समझना कि उसने द्वार बंद कर लिए।

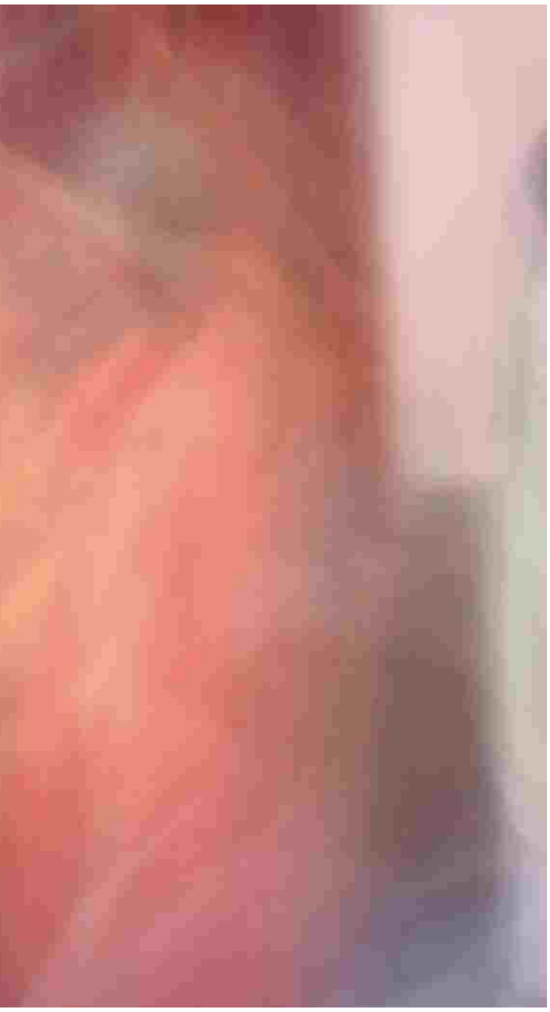

आप कहेंगे, क्यों? दूसरे के साथ इतनी कठिन है, तो खुद के साथ और भी कठिन क्यों होगी? खुद के साथ तो आसान होनी चाहिए। हम तो सब समझते हैं कि हम सब अपने को प्रेम करते ही हैं।

भ्रांति है वह बात, फैलेसी है, झूठ है। हममें से ऐसा आदमी बहुत मुश्किल है, जो अपने को प्रेम करता हो। क्योंकि जो अपने को प्रेम कर ले, उसकी जिंदगी में बुराई टिक नहीं सकती; असंभव है। अपने को प्रेम करने वाला शराब पी सकता है? अपने को प्रेम करने वाला क्रोध कर सकता है?

बुद्ध निकलते हैं एक रास्ते से और एक आदमी बुद्ध को गालियां देता है। तो बुद्ध के साथ एक भिक्षु है आनंद, वह कहता है कि आप मुझे आज्ञा दें, तो मैं इस आदमी को ठीक कर दूं। तो बुद्ध बहुत हंसते हैं। तो आनंद पूछता है, आप हंसते क्यों हैं? वह आदमी भी पूछता है, आप हंसते क्यों है? तो बुद्ध कहते हैं, मैं आनंद की बात सुनकर हंसता हूं। यह भी बड़ा पागल है। दूसरे की गलती के लिए खुद को सजा देना चाहता है। बुद्ध कहते हैं, दूसरे की गलती के लिए खुद को सजा देना चाहता है। आनंद ने कहा, मैं समझा नहीं। बुद्ध ने कहा, गाली उसने दी, क्रोध तू करना चाहता है! सजा तू भोगेगा। क्रोध तो अपने में आग लगाना है।

हम सब क्रोध को भलीभांति जानते हैं। क्रोध से बड़ी सजा क्या हो सकती है? लेकिन दूसरा गाली देता है, हम क्रोध करते हैं। बुद्ध कहते हैं, दूसरे की गलती के लिए खुद को सजा!

हम सब वही कर रहे हैं। मित्रता अपने साथ कोई भी नहीं है। और अपने साथ मित्रता इसलिए भी कठिन है कि दूसरा तो विज़िबल है, दूसरा तो दिखाई पड़ता है; हाथ फैलाया जा सकता है दोस्ती का। लेकिन खुद तो बहुत इनविजिबल, अदृश्य सत्ता है; वहां तो हाथ फैलाने का भी उपाय नहीं है। दूसरे मित्र को तो कुछ भेंट दी जा सकती है, कुछ प्रशंसा की जा सकती है, कुछ दोस्ती के रास्ते बनाए जा सकते हैं, कुछ सेवा की जा सकती है। खुद के साथ तो कोई भी रास्ते नहीं हैं। खुद के साथ तो शुद्ध मैत्री का भाव हो। और कोई रास्ता नहीं है, और कोई सेतु नहीं है। अगर हो समझ, अंडरस्टैंडिंग ही सिर्फ सेतू बनेगी। उतनी समझ हममें नहीं है।

हम सब नासमझी में जीते हैं। लेकिन नासमझी में इतनी अकड़ से जीते हैं कि समझ को आने का दरवाजा भी खुला नहीं छोड़ते। असल में नासमझ लोगों से ज्यादा स्वयं को समझदार समझने वाले लोग नहीं होते! और जिसने अपने को समझा कि बहुत समझदार है, समझना कि उसने द्वार बंद कर लिए। अगर समझदारी उसके दरवाजे पर दस्तक भी दे, तो वह दरवाजा खोलने वाला नहीं है। वह खुद ही समझदार है!

हमारी समझदारी का सबसे गलत जो आधार है, वह यह है कि हम अपने को प्रेम करते ही हैं। यह बिलकुल झूठ है। अगर हम अपने को प्रेम करते होते, तो दुनिया की यह हालत नहीं हो सकती थी, जैसी हालत है। अगर हम अपने को प्रेम करते होते, तो आदमी पागल न होते, आत्महत्याएं न करते। अगर हम अपने को प्रेम करते होते, तो दुनिया में इतना मानसिक रोग न होता। चिकित्सक कहते हैं कि इस समय कोई सत्तर प्रतिशत रोग मानसिक हैं। वे अपने को घृणा करने से पैदा हुए रोग हैं। हम सब अपने को घृणा करते हैं। हजार तरह से अपने को सताते हैं। सताने के नए-नए ढंग ईजाद करते हैं। अपने को दुख और पीड़ा देने की भी नई-नई व्यवस्थाएं खोजते हैं। यद्यपि हम सबके पीछे बहुत तर्क इंतजाम कर लेते हैं।

यह तो चिकित्सक कहते हैं कि सत्तर प्रतिशत बीमारियां आदमी अपने को सजा देने के लिए विकसित कर रहा है। लेकिन मनस-चिकित्सक कहते हैं कि यह आंकड़ा छोटा है अभी; अंडरएस्टिमेशन है। असली आंकड़ा और बड़ा है। और अगर आंकड़ा किसी दिन ठीक गया, तो निन्यानबे प्रतिशत बीमारियां मनुष्य अपने को सजा देने के लिए ईजाद करता है।

इतनी घृणा है खुद के साथ! वह हमारे हर कृत्य में प्रकट होती है। हर कृत्य में! जो भी हम करते हैं—एक बात ध्यान में रख लेना, तो कसौटी आपके पास हो जाएगी—जो भी आप करते हैं, करते वक्त सोच लेना, इससे मुझे सुख मिलेगा या दुख? अगर आपको दिखता हो, दुख मिलेगा और फिर भी आप करने को तैयार हैं, तो फिर आप समझ लेना कि अपने को घृणा करते हैं। और क्या कसौटी हो सकती है?

मुंह से गाली निकलने के लिए तैयार हो गई है; पंख फड़फड़ाकर खड़ी हो गई है जबान पर; उड़ने की तैयारी है। सोच लेना एक क्षण कि इससे अपने को दुख मिलेगा या सुख! दूसरे की मत सोचना, क्योंकि दूसरे की सोचने में धोखा हो जाता है। आदमी सोचता है, दूसरे को दुख मिलेगा या सुख! यह मत सोचना। पहले तो अपना ही सोच लेना कि इससे मुझे दुख मिलेगा या सुख! और अगर आपको पता चले कि दुख मिलेगा, और फिर भी आप गाली दो; तो फिर क्या कहा जाए, आप अपने को प्रेम करते हैं!

नहीं, हम सोचने का मौका भी नहीं देते। नहीं तो डर यह है कि कहीं ऐसा न हो कि गाली न दे पाएं।